बिहार राज्य जैव विविधता पर्षद्

जैव विविधता अधिनियम, 2002 अंतर्गत वैधानिक निकाय

बिहार सरकार

विश्व पर्यावरण दिवस 2025

World Environment Day 2025

Ending Global Plastic Pollution वैश्विक प्लास्टिक प्रदूषण को समाप्त करना।

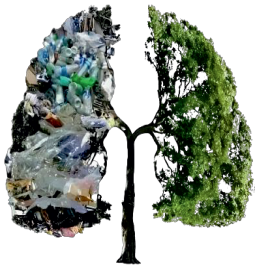

प्लास्टिक प्रदूषण से जैव विविधता एवं पारितंत्र की हानि

- प्राकृतिक अधिवासों पर संकट
- नदी, झील एवं आद्र भूमि की जैव विविधता का क्षय
- प्लास्टिक प्रदूषण से मिट्टी, जल एवं समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र पर दुष्प्रभाव
- माइक्रोप्लास्टिक से खाद्य श्रंखला पर कुप्रभाव
- कीट-पतंगों तितलियों, मधुमखियों, पक्षियों और वन्य जंतुओं के जीवनचक्र के लिए घातक
- वनस्पति विविधता के लिए हानिकारक

पर्यावरण बिगड़ने का प्रमुख कारण - जैव विविधता का मानवजनित क्षरण

जैविक विविधता की पर्यावरण हितकर भूमिका

- ✓ पारिस्थितिकी संतुलन और पुनर्स्थापन
- ✓ जल संसाधनों की सुरक्षा और स्थायित्व
- ✓ प्रदूषण पर बेहतर नियंत्रण
- ✓ भूमि क्षरण की रोकथाम, मिट्टी की सुनिश्चित उर्वरता
- ✓ जलवायु परिवर्तन का शमन
- ✓ जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों का सामना करने में सहायता
- ✓ खाद्य उत्पादन संसाधनों की सुरक्षा
- ✓ स्वास्थ्यवर्धक वातावरण और परिवेश

जैव विविधता का संरक्षण - पर्यावरण सुधार का प्रभावी साधन

आइये! प्लास्टिक प्रदूषण की रोकथाम के लिए संकल्पित हो और साथ ही निम्न कार्यों द्वारा जैव विविधता का संरक्षण कर पर्यावरण सुधार में सहभागी बनें

- नदियों, झीलों, पहाड़ियों जैसे प्राकृतिक स्थल का प्रदूषण और अतिक्रमण से संरक्षण
- पक्षियों और उनके वास स्थलो की रक्षा
- विविध पेड़-पौधों की रक्षा और तब तक नहीं काटना जब तक कि अत्यंत आवश्यक न हो
- प्राकृतिक विरासत को संजोने की संवेदनाशीलता
- जंगलों और निर्जन क्षेत्रों में रहने वाले जंगली जानवरों का संरक्षण और उनके प्रति सहिष्णुता
- आहार में विविधता और देशज अनाज, फल, शाक-सब्जी को अपने भोजन में सम्मलित रखना
- सिंगल यूज एवं नन-डिग्रेडेबल प्लास्टिक से परहेज एवं जैविक संसाधनों से निर्मित सामग्रियों को बढ़ावा

पर्यावरण संरक्षण का संदेश!

परिपूर्ण जैव विविधता, स्वच्छ परिवेश!!

PR. No. 005191 (B & C) D. 2025-26

संदेश

विश्व पर्यावरण दिवस 05 जून 2025

Ending Plastic Pollution Globally

इस वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस का फोकस थीम Ending Plastic Pollution Globally प्लास्टिक प्रदूषण को समाप्त करना है।

पृथ्वी का पर्यावरण स्वास्थयपूर्ण जीवन के लिये अनुकूल रहे, इसके लिये प्राकृतिक जैव विविधता का बरकरार रहना अनिवार्य है।

यदि पर्यावरण समग्र रूप से अच्छी स्थिति में होगी, तो जैव विविधता भी परिपूर्ण होगी। पर्यावरण में विकार एवं बिगड़ाव होने पारितंत्र यानि प्राकृतिक व्यवस्थाएँ असंतुलित होते हैं एवं जैव विविधता का क्षय होने लगता है। विगत दो शताब्दी में मानवीय विकास प्रक्रियाओं से पर्यावरण की स्थिति खराब हुई तथा पारितंत्र में असंतुलन होने लगा। 20वीं सदी के अन्त तक स्थिति काफी विकट हो गयी, जिसका दुष्परिणाम हैं – जैव विविधता का तेजी से घटना, भूमि का व्यापक रूप से अवकृष्ट होना और मरूस्थलीकरण, वायु एवं जल में विभिन्न स्वरूप के प्रदूषण की समस्याएं, Biologically invasive species के अनियंत्रित विस्तार के कारण कई प्रकार की पारिस्थितिकीय समस्याएं तथा जलवायु परिवर्त्तन।

पर्यावरण के बिगड़ाव का एक बड़ा कारण विभिन्न प्रकार का प्रदूषण है, जिसमें प्लास्टिक प्रदूषण भी काफी व्यापक और हानिकारक है। पिछली सदी में प्लास्टिक अपने उत्पादन एवं उपयोग सम्बन्धी गुणों के कारण अपनाया गया। परंतु इसके अतिशय तथा गैर–जिम्मेदारी से अंधाधुंध उपयोग एवं कचरा के रूप में उत्सर्जन से प्लास्टिक प्रदूषण के दुष्परिणाम होने लगे हैं। प्लास्टिक प्रदूषण का कुप्रभाव समग्र जीव–जन्तुओं तथा उनसे संयोजित पारितंत्र पर भी गंभीर रूप से पड़ रहा है।

अतएव प्लास्टिक प्रदूषण की रोकथाम भूमि, मिट्टी, पानी एवं हवा के प्रदूषण निवारण के साथ–साथ जैविक तंत्रों के संरक्षण और पारितंत्र के संतुलन की बहाली के लिये अनिवार्य है।

21वीं सदी में प्लास्टिक प्रदूषण की रोकथाम के लिये विभिन्न स्तर पर नीतिगत, कानूनी और कार्यक्रम आधारित प्रयास किये जाने लगे हैं। इनमें ''सिंगल यूज एण्ड थ्रो'' प्लास्टिक के उपयोग पर निषेध, नन–डिग्रेडेबल प्लास्टिक को उपयोग पर प्रतिबंध तथा पर्यावरण अनुकूल वैकल्पिक निर्माण सामग्री का विकास और प्रसार सम्मिलित है।

बिहार राज्य में भी प्लास्टिक के दुष्परिणामी उपयोग को प्रतिबन्धित करने का कार्यक्रम सरकार एवं वैधानिक निकायों द्वारा सम्बन्धित हितधारकों–पक्षकारकों तथा जन सहयोग से संचालित किया जा रहा है।

प्लास्टिक प्रदूषण से पर्यावरणीय अनुकूलता को बचाने एवं साथ–साथ जैव विविधता को संरक्षित करने के लिये निम्नांकित प्रयास अपेक्षित है :–

- सिंग्ल यूज प्लास्टिक उपयोग नहीं किया जाय।
- प्लास्टिक अपशिष्ट (प्लास्टिक वेस्ट, Packaging या अन्य) का डिस्पोजल जिम्मेदारी के साथ केवल म्यूनिस्पैलटी द्वारा संचालित कूड़ा–कचरा संग्रहण व्यवस्था के अन्तर्गत किया जाय।
- बगानों, उद्यानों, नदी, तट, झील, तालाब एवं पोखर, वन्य एवं अन्य प्राकृतिक क्षेत्र में पर्यटक स्थल इत्यादि को प्लास्टिक प्रदूषण से मुक्त रक्खा जाय। यदि इन स्थलों पर पूर्व से प्लास्टिक कूड़ों का जमाव है, तो अभियान चला कर उन्हें हटाया जाय।
- प्लास्टिक के वैकल्पिक पर्यावरणीय दृष्टिकोण से कम हानिकारक सामग्री अथवा जैविक संसाधन से निर्मित सामग्रियों को बढ़ावा दिया जाय।
- अपनी जीवन–चर्या में प्लास्टिक निर्मित सामग्रियों के उपयोग एवं उनके डिस्पोजल में पर्यावरण हानि से बचाव हेतु मनोयोग से सचेत रहें तथा ज्यादा–से–ज्यादा प्रदूषण से बचाव के लिये सतत् रूप से सचेष्ट रहें।

इन उपायों द्वारा हम प्लास्टिक प्रदूषण से जैव विविधता की हानि को कम कर सकते हैं तथा पारितंत्रों के संतुलन एवं पर्यावरण संरक्षण में सहभागी हो सकते हैं।

जै व वि वि ध ता

बेहतर संतुलन

स्वस्थ पारितन्त्र संरक्षित पर्यावरण

सुरक्षित और समृद्ध जीवन